विश्वासयोग्य

विश्वास के साथ परमेश्वर के साथ चलना — दिन 1

उत्पत्ति 5:23-24

23 इस प्रकार हनोक की कुल आयु तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई।
24 हनोक परमेश्वर के साथ–साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

"विश्वास" या "विश्वासी" इस शब्द का पवित्रशास्त्र में यह पहला सन्दर्भ है। हनोक विश्वास से परमेश्वर के साथ चलता रहा। "विश्वास" इस शब्द का अर्थ है; निष्ठावान (वफादार) और स्थिर बने रहना।

परमेश्वर के साथ चलना खुद अपने आप में सचे, गहरे रिश्ते को दर्शाता है। आमोस 3:3 कहता है, "यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?" इसका अर्थ यह है कि हनोक परमेश्वर से सहमत था इसलिये उनके साथ चल रहा था।

जैसे प्रेरितों ने यीशु को ऊपर जाते हुए देखा, सम्भव है कि ठीक उसी तरह उस समय के लोगों ने भी परमेश्वर को हनोक को ऊपर उठाकर ले जाते हुए देखा होगा।

यदि हम एक वर्ष में कितने दिन होते हैं इसका हिसाब करें तो हनोक की आयु को हम भुला नहीं सकते।

उपयोग:
परमेश्वर के साथ हमारा चलना कैसा है? निष्ठावान और स्थिर बनने के लिये हमें और क्या करना होगा? क्या किसी बात में हम परमेश्वर से सहमती नहीं रखते हैं?

परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं — दिन 2

1कुरिन्थियों 1:9

परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसने तुम को अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।

यदि यह प्रश्न पूछा गया कि, हमें क्यों बुलाया गया था? तो इसके कई उत्तर होंगे। हमें पवित्र होने के लिये बुलाया गया है। हमें परमेश्वर की महिमा के लिये बुलाया गया है। सभी बातों में परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये हमें बुलाया गया है। इस वचन में हम देख सकते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ संगति करने के लिये हमें बुलाया है।

पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया को यह पत्र लिख रहा है, जिसमें बहुत सी समस्याएँ, बहुत सी कमज़ोरियाँ, बहुत सी अच्छी बातें थीं... इसे इतने आत्मविश्वास के साथ वह इसलिये लिख पा रहा है क्योंकि वह जानता है कि वह परमेश्वर जिसने उन्हें बुलाया है, विश्वासयोग्य है। वही है जो अन्त में उन्हें निर्दोष ठहराकर अपनाएगा।

उपयोग:
1कुरिन्थियों 1:4-9 के द्वारा प्रार्थना करो। धन्यवाद से भरी एक प्रार्थना।

पूरे विश्वास के साथ प्रार्थना करो — दिन 3

रोमियों 12:12

आशा में आनन्दित रहो ; क्लेश में स्थिर रहो ; प्रार्थना में नित्य लगे रहो।

परमेश्वर पर विश्वास रखनेवाले प्रत्येक स्त्री–पुरूष में एक आम बात जो हम हमेशा देखते हैं वो है प्रार्थना। आपकी प्रार्थना का उत्तर देने से शैतान परमेश्वर को रोक नहीं सकता, परन्तु वह अपनी प्रार्थना करने से आपको रोक सकता है।

किसी ने कहा है। दर्द, निशानी है आपके जीवित होने की। समस्या, निशानी है आपके मजबूत होने की। प्रार्थना इस बात की निशानी है कि आप अकेले नहीं हैं।

हमारे आस–पास, हमारे परिवार के सदस्यों के साथ हो रहे सभी बातों पर हम नियंत्रण नहीं कर सकते हैं...लेकिन उनके लिये हम प्रार्थना कर सकते हैं। चिन्ता तनाव बढ़ाता है परन्तु प्रार्थना शान्ति बहाल करता है।

उपयोग:
अपने परिवार के, अपने पारीवारिक गुट के प्रत्येक सदस्यों के प्रति आपकी इच्छाओं/ लक्ष्यों / बिनतियों के लिये प्रार्थना करो।

परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं — दिन 4

रोमियों 3:3-4

3 यदि कुछ विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ ? क्या उनके विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी ?
4 कदापि नहीं ! वरन् परमेश्वर सच्चा और हर एक मनूष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है, "जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए।"

सम्भव है कि हमारे आस–पास कुछ ऐसे लोग हों जो अविश्वासी हैं। हमारे अपने परिवार के लोग भी हो सकते हैं। पर इससे परमेश्वर की विश्वासयोग्यता समाप्त नहीं होती। उन सभी सन्देह करनेवालों के बीच में रहते हुए भी हमें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर हमारा विश्वास बनाए रखना होगा।

यदि परमेश्वर कुछ कहता है और संसार के सारे लोग कुछ और कहते हैं, तो परमेश्वर सच्चा है और संसार के सभी लोग झूठे हैं। परमेश्वर केवल सच ही बोलते हैं, कभी झूठ नहीं बोल सकते। भले ही कोई परमेश्वर की सच्चाई पर विश्वास न करे फिर भी हमें केवल परमेश्वर की सच्चाई पर ही विश्वास रखना है। किसी राय पर आम लोगों की सहमती एक मसीही के लिये कोई मायने नहीं रखती। एक मसीही संसार के सारे लोगों की राय की बजाए परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करता और अधिकतर उसीका विचार करता है।

उपयोग:
ऐसी बातों की सूचि बनाओ जहाँ संसार परमेश्वर की बातों पर नहीं लेकिन उसके विपरीत बातों पर विश्वास करता है। जो इन बातों के धोखे में हैं उनके लिये प्रार्थना करो।

थोड़े में विश्वासयोग्य — दिन 5

मत्ती 25:21

उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

फिर से इसे वचन 23 में दोहराया गया है। हालांकि एक सेवक को पाँच तोड़े और दूसरे को दो तोड़े दिये गए थे फिर भी उन दोनों सेवकों का प्रतिफल समान था। प्राप्त संसाधनों के अनुसार प्रत्येक ने समान रूप से काम किया।

यह बताता है कि स्वामी अपने सेवकों में अच्छाई और विश्वासीपन देखना चाहता था। इन सेवकों ने जिस आर्थिक सफलता का आनन्द उठाया वह उन्हें इसलिये मिला क्योंकि वे अच्छे और विश्वासी थे। उनके स्वामी ने पहले उनके चरित्र के इन गुणों को देखा न कि उनके कमाए हुए धन को।

उपयोग:
परमेश्वर ने पहले से ही आपको जो दिया है उसके प्रति अधिक विश्वासी बनने में क्या आपको और अधिक सुधार लाने की आवश्यक्ता है?

विश्वासीपन से अनुग्रह और अच्छा नाम प्राप्त होता है — दिन 6

नीतिवचन 3:3-4

3 कृपा और सच्चाई तुझसे अलग न होने पाएँ, वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।
4 और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

प्रेम और अनुग्रह दोनों साथ–साथ चलते हैं। परमेश्वर का प्रेम और विश्वासीपन हमारे लिये ऐसा गहना होना चाहिये, जिसे हम पहनें। उसे हमें हमारे हृदयरूपी पटिये पर लिख लेना चाहिये। यदि हम ऐसा करते हैं तो, वैसा ही प्रेम और विश्वास हम दूसरों पर भी दिखाते हैं।

प्रेम और विश्वासीपन के अन्य वचन:

भजन संहिता 85:10 करूणा और सच्चाई आपस में मिल गईं हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है।

भजन संहिता 86:15 परन्तु प्रभु, तू दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर है, तू विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करूणामय है।

भजन संहिता 89:14 भोर को हमें अपनी करूणा से तृप्त कर, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें।

नीतिवचन 14:22 जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे भ्रम में नहीं पड़ते? परन्तु भली युक्ति निकालनेवालों से करूणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।

नीतिवचन 16:6 अधर्म का प्रायश्चित कृपा और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाता है।

नीतिवचन 20:28 राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है, और कृपाकरने से उसकी गद्दी सम्भलती है।

उपयोग:
ऊपर दिए वचनों पर मनन करो।

विश्वासीपन से अनुग्रह और अच्छा नाम प्राप्त होता है — दिन 7

भजन संहिता 97:10
हे यहोवा के प्रेमियों, बुराई से घृणा करो ; वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता, और उन्हें दुष्टों से बचाता है।

परमेश्वर के लोग वे हैं जो उससे प्रेम करते और मूर्तियों की पूजा नहीं करते। लेकिन जो पवित्र है यदि हम उससे प्रेम करेंगे तो, जो अपवित्र है, हम उससे घृणा करेंगे।

हमें उससे प्रेम करना चाहिये, उसकी आज्ञाओं का पालन (दुष्टता से घृणा) करना चाहिये, उसमें आनन्दित होना चाहिये, और उसके सभी दया के लिये उसका धन्यवाद करना चाहिये। क्योंकि वही तो है जो उसके लोगों की रक्षा करता, उन्हें छुड़ाता, उनके मार्ग में रोशनी देता, और उनके हृदय को आनन्दित करता है।

उपयोग:
उन समयों को याद करो जब परमेश्वर ने आपको दुष्ट के हाथों से छुड़ाया था और उसकी प्रशंसा करो।

विश्वासी भण्डारी दिन 8

1पतरस 4:10

जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाएँ।

मसीही प्रेम का परिणाम सेवा होना चाहिये। परमेश्वर ने जो प्रेम का वरदान हमें दिया है, कलीसिया के अपने परीवार में प्रेम बाँटते समय वही प्रेम का वरदान सहजता से दिखाई देता है।

प्रत्येक मसीही को कम से कम एक आत्मिक वरदान मिला है जिसका उपयोग उसे परमेश्वर की महिमा और कलीसिया को मजबूत बनाने के लिये करना चाहिये।

हम भण्डारी हैं। परमेश्वर ने यह वरदान हमें इसलिये दिये हैं कि हम उनका उपयोग उसकी कलीसिया की भलाई के लिये करें। परमेश्वर हमें आत्मिक योग्यता भी देता है कि हम अपने वरदानों का विकास करके कलीसिया के विश्वासयोग्य सेवक बनें।

उपयोग:
क्या आपने अपने वरदानों को पहचाना है? इनका अधिक से अधिक उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करने की योजना बनाओ।

आखरी साँस तक विश्वासी बने रहो दिन 9

प्रकाशितवाक्य 2:10

जो दुःख तुझको झेलने होंगे, उन से मत डर। क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कुछ को बन्दीगृह में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दर दिनों तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।

स्मुरना की कलीसिया पर कोई भी दोष नहीं लगाया गया! परमेश्वर ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि उन्हें शैतान के योजना की कल्पना थी और परिस्थिती पूरी तरह से उनके नियंत्रण में थी।

उनका क्लेश लम्बे समय के लिये नहीं था; दस दिन "एक छोटा समय" दर्शाता है। सरकार चाहे कुछ भी करने की धमकी दे इससे कोई फर्क नहीं पड़ना था, महत्वपूर्ण था विश्वासीपन और मसीह के लिये खरा उतरना।

दूसरे बातों के मुकाबले मसीह के प्रति लवलीन रहने के लिये ज्यादा कीमत चुकाना पड़ता है। जैसे–जैसे अन्तिम समय के आने का तनाव बढ़ेगा, वैसे–वैसे सताव भी बढ़ेगा, और परमेश्वर के लोगों को तैयार रहना पड़ेगा।

उपयोग:
सरकार के लिये और जिस सताव की आपको जानकारी है उसके लिये प्रार्थना करो।

उसके विश्वासी लोग बिछौनों पर पड़े-पड़े जयजयकार करें — दिन 10

भजन संहिता 149:5

भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपने बिछौनों पर भी पड़े-पड़े जयजयकार करें।

परमेश्वर की महिमा में विश्वासी इतने आनन्दित रहते हैं कि वे अपने बिस्तर पर भी ज़ोर-ज़ोर से परमेश्वर का जयजयकार करते हैं। जागते समय उनके पास इतना समय नहीं होता कि वे परमेश्वर के प्रति अपनी सारी प्रशंसा और आनन्द व्यक्त करें, तो इसीलिये उन्हें बिस्तर में भी निरन्तर यह करते रहना चाहिये।

हालांकि परमेश्वर की महिमा के गीत विशेषत: कलीसिया के लोगों के साथ मिलकर गाने का आनन्द ही कुछ और है, परन्तु उसे कभी भी केवल वहीं तक सीमित नहीं रखना चाहिये। विश्वासियों के लिये अपने बिस्तर में लेटे हुए ज़ोर से परमेश्वर की महिमा के गीत गाना एक पवित्र और अद्भुत बात है।

उपयोग:
ऊँची आवाज़ में अपने पसन्दिदा गीत गाओ (बिस्तर में!)।

सच्चाई के प्रति विश्वासीपन — दिन 11

3 यूहन्ना 1:3

क्योंकि जब भाईयों ने आकर तेरे उस सत्य की गवाही दी जिसपर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ।

जब भी कोई विश्वासी किसी दूसरे विश्वासी की, सत्य के प्रति विश्वासीपन की गवाही देता है, तो बड़ा ही आनन्द होता है। क्या हम सत्य के प्रति हमारे विश्वासीपन से दूसरों को वो आनन्द पहुँचाते हैं? यदि हम इस तरह से जाने जाएँ, तो कितना अच्छा होगा।

सच्चाई में चलने का अर्थ है एक ऐसे मार्ग पर चलना जो वास्तविक और असली (सत्य) हो। इसका अर्थ है जिस सत्य पर आपका विश्वास है उस सत्य पर निरन्तर चलते रहना। यदि आप यह विश्वास करते हैं कि आप परमेश्वर के पुत्र हो, तो स्वर्ग के बेटे की सी चाल चलो। यदि आप यह विश्वास करते हैं कि आपको क्षमा मिली है, तो एक क्षमा प्राप्त व्यक्ति की तरह जीओ।

उपयोग:
आज हम कैसे जाने जाते हैं? जिन बातों के द्वारा आप पहचाने जाना चाहते हैं और आपको किन बातों में बदलने की आवश्यक्ता है, उन्हें लिखो।

एक विश्वासी बहुत आशीषें पाता है — दिन 12

नीतिवचन 28:20

सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते रहते हैं, परन्तु जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता।

एक विश्वासी व्यक्ति सच्चाई पर चलता है, और दूसरों के साथ तोल–मोल और लेन–देन के मामले में बड़ी सच्चाई और न्याय से व्यवहार करता है। वह इमानदार और धर्मी होता है। आशीषें परमेश्वर और मनुष्य दोनों से प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य उसके नाम की प्रशंसा करेंगे और परमेश्वर उसे आशीष देकर अपनी स्वीकृती दिखाएँगे।

जो जल्दि से धनवान बनना चाहता है, वह मासूम (बेगुनाह)नहीं हो सकता। न तो यह धन–सम्पत्ति अर्जित करने के बारे में है और न ही धन–सम्पत्ति पाना बुरा है, परन्तु यह उस धन को जल्दबाज़ी से पाने की लालच के बारे में है। ऐसा व्यक्ति एक विश्वासी के रूप में नहीं जाना जाएगा और परिणामस्वरूप बहुत सी आशीषों को खो देगा।

उपयोग:
दूसरों के साथ हमारा लेन–देन कैसा है? क्या आपको किसी का कुछ कर्ज़ चुकाना है, यदि हाँ, तो उसे लौटाने की योजना बनाओ और इसकी सूचना दो।

विश्वासीपन – कानून के हिसाब से महत्वपूर्ण है — दिन 13

मत्ती 23:23

हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पुदीने, और सौंफ, और जीरे का दरवाँ अंश तो देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।

न्याय, दया और विश्वासीपन, परमेश्वर इन महत्वपूर्ण गुणों की खोज में हैं। नियमों का पालन इनकी जगह नहीं ले सकता। जब कि बातों को गहराई से समझना अच्छा है, पर आत्मिक मामलों की प्राथमिकताओं को समझने में हमें कभी भी चूकना नहीं चाहिये।

यीशु ने दशमांश देने के चलन की कभी निन्दा नहीं की। फरीसियों ने महत्वहीन बातों को बहुत महत्वपूर्ण बना दिया। जीवन की प्रत्येक छोटी से छोटी बातों के लिये उनके पास नियम थे, और इनके चलते वे महत्वपूर्ण बातों को भूल गए।

उपयोग:
हमारे ऐसे कौनसे संकल्प हैं जिनका पहले हम बहुत सच्चाई से पालन करते थे पर आज नहीं कर रहे हैं? क्या हम महत्वहीन बातों को महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण बातों को महत्वहीन बना रहे हैं? इसके द्वारा प्रार्थना करो।

उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है — दिन 14

भजन संहिता 100:5

क्योंकि प्रभु भला है; उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

पीढ़ी से पीढ़ी तक, प्रभु पर भरोसा किया जा सकता है। माताओं और पिताओं को आज परमेश्वर की आराधना करना महत्वपूर्ण है क्योंकि आनेवाले दिनों में उनके बच्चों पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा।

सभी पीढ़ियों में हमारा परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में विश्वासयोग्य है। हम एक ऐसे परमेश्वर को प्रेम और आदर नहीं दे पाते जो अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं करता, और जो खुद सच्चाई से प्रेम नहीं करता; हम ऐसे परमेश्वर का आदर नहीं कर पाते जो बदलनेवाला और 'चलता है' स्वभाव रखनेवाला है – एक पीढ़ी में एक बात से और दूसरी पीढ़ी में दूसरे बात से प्रेम करता है।

उपयोग:

विचार करो कि आपके माता–पिता की आराधना ने आप पर कैसा प्रभाव डाला? इनके द्वारा प्रार्थना करो। आप अपने जीवन से अगली पीढ़ी को जो देना चाहते हैं उन निर्णयों की एक सूचि बनाओ।

विश्वासीपन – कानून के हिसाब से महत्वपूर्ण है — दिन 15

मत्ती 1:19

सो उसके पति युसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

एक बात जिसका पालन यहूदी लोग दृढ़ संकल्प से करना चाहते थे वो था मूसा की व्यवस्था (नियम)। उन्होंने निश्चित किया कि व्यवस्था के प्रति वे विश्वासी बने रहेंगे। युसुफ जो व्यवस्थाओं के प्रति वचनबद्ध था ऐसे आधार ढूँढता है जहाँ वो व्यवस्था का पालन भी करे और साथ ही साथ उसे सार्वजनिक रूप से अपमानित भी न करे।

आज हम अपने आस–पास के लोगों में और अपने व्यक्तिगत जीवन में यह देखते हैं कि, जहाँ नियम पालन करने की बात आती है वहाँ हम औरों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने की लालसा में गिरते हैं। जब हम खुद को ऊँचा और दूसरों को नीचा दिखाते हैं, तब यह हमें आनन्द का एहसास दिलाता है।

उपयोग:

हमारे पास दो सबसे बड़ी आज्ञाएँ हैं। सारी व्यवस्था और सारे नबी इन्हीं दो आज्ञाओं पर टिके हैं। परमेश्वर से प्रेम करो और एक दूसरे से प्रेम करो। इन दो आज्ञाओं के प्रति वफादार बने रहने के लिये हमें और क्या करना होगा?

परमेश्वर अपने विश्वासी सेवकों के पांवों को सम्भाले रहेगा दिन 16

1शमुएल 2:9

वह अपने भक्तों के पाँवों को सम्भाले रहेगा, परन्तु दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।

जब परमेश्वर के लोग इस पृथ्वी पर चलते और रोशनी में चलते हैं, तब प्रभु उनके पाँवों को सम्भालेगा और मार्ग दिखाएगा, परन्तु दुष्ट आत्मिक अन्धकार में चलेंगे क्योंकि, वे अपने खुद की बुद्धि और ताकत पर भरोसा रखते हैं।

दुष्टों को देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्होंने सबकुछ पा लिया हो, परन्तु एक दिन परमेश्वर के क्रोध की आन्धी भयंकर न्याय के साथ उनपर टूट पड़ेगी। जो परमेश्वर का विरोध करते हैं परमेश्वर उनके साथ बहुत धीरज धरता है, लेकिन उनका दिन निकट है।

उपयोग:

जब भी आप अपने खुद की योग्यता या बुद्धि या दूसरी बातों पर पूरी तरह से निर्भर रहे और इन बातों ने आपको परमेश्वर से भी अधिक सुरक्षित महसूस कराया, जीवन के ऐसे समयों में फिर से परमेश्वर के पास लौटने के लिये जो अनुग्रह परमेश्वर ने आप पर किया उन समयों के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

सो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान सेवक कौन है दिन 17

मत्ती 24:45-47

45 सो वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान सेवक कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर नीरिक्षक नियुक्त किया कि वह समय पर उन्हें भोजन दे?
46 धन्य है, वह सेवक, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
47 मैं तुमसे सच कहता हूँ; वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति का निरीक्षक नियुक्त करेगा।

यीशु ने हमसे कहा, जब प्रभु चले जाएँ तब हमें परिश्रम से काम को आगे बढ़ाते रहना चाहिये। हमें ऐसा विश्वासी और बुद्धिमान सेवक बनना चाहिये जो स्वामी की अनुपस्थिती में उसके काम का ध्यान रखता है।

यीशु ने यह प्रतिज्ञा भी दी कि, हमारे परिश्रम का प्रतिफल हमें दिया जाएगा। सेवक मालिक की सेवा करते हैं, पर मालिक को पता होता है कि सेवकों का ध्यान कैसे रखे और कैसे उसे प्रतिफल दे।

उपयोग:

परमेश्वर की सेवकाई में हमारी ऐसी कौनसी बातें हैं जिसमें हमें सुधार लाना होगा, ताकि जब प्रभु लौटें तो हमें प्रतिफल दें।

2 तिमुथियुस 2:11-13

11 यह बात सच है: यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो हम उसके साथ जीएँगे भी।
12 यदि हम धीरज से दुख–सताव सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इनकार करेंगे, तो वह भी हमारा इनकार करेगा।
13 यदि हम अविश्वासी हों, तो भी वह विश्वास योग्य बना रहता है ; क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।

क्या विरोधाभास है! मृत्यु जीवन देती है! दु:ख–सताव महिमा में राज्य करने की ओर ले जाती है। हमें किसी बात से डरने की आवश्यक्त नहीं! महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने प्रभु का "इनकार" न करें, क्योंकि यदि हम यहाँ उसका इनकार करेंगे, तो वह पिता के सामने हमारा इनकार करेगा।(मत्ती 10:33)

यदि हम उसके नाम का इनकार करेंगे, तो महिमा में जब महान "उपस्थिति में नाम पुकारे जाएँगे", और "पदक" दिए जाएँगे, तब हम वहाँ अपना इनाम खो देंगे। परन्तु वचन 13 में पौलुस इस बात को स्पष्ट करता है कि, हमारा अपना सन्देह और अविश्वास उसे बदल नहीं सकता: "वह विश्वासयोग्य बना रहता है" ; "वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता"। हमारे स्वयं के विश्वास या भावनाओं पर हम विश्वास नहीं रखते, क्योंकि वे बदलते और असफल हो जाते हैं। हम हमारा विश्वास मसीह में रखते हैं।

महान धर्मप्रचारक (मिशनरी) जे. हडसन टेलस, अक्सर कहते थे, "विश्वासी बनने का प्रयत्न हमें विजयी नहीं बनाता, परन्तु वह **एक जो विश्वासयोग्य है** उसका अनुकरण करके हम विजय प्राप्त करते हैं"।

उपयोग:
वह समय याद रखो जब आप अविश्वासी थे और कैसे हमारे विश्वासयोग्य परमेश्वर ने हमें छुड़ाया। कभी भी उसका इनकार न करने का निर्णय बनाओ।

परमेश्वर अपने विश्वासी सेवकों के पांवों को सम्भाले रहेगा — दिन 19

1शमुएल 12:24-25

24 केवल इतना हो कि, तुम लोग प्रभु का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो। यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसे बड़े–बड़े काम किये हैं।
25 परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुमहारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे।

परमेश्वर के प्रति हमारी सारी सेवा, हमारा आज्ञापालन, हमारा सारा प्रेम को इस सन्दर्भ से तौलना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये बड़े–बड़े काम किये हैं, इसलिये हम यह सब करते हैं। परमेश्वर की सेवा हम इसलिये नहीं करते कि हमारे लिये लिये बड़े–बड़े काम करने के लिये हम परमेश्वर को फुसलाएँ। उसने पहले ही हमारे लिये महान कार्य किये हैं और हमसे कहता है कि हम विश्वास के साथ उसे ग्रहण करें। उसने जो महान कार्य हमारे किये हैं, तब इस कारण से हम उसकी सेवा करते हैं।

परमेश्वर ने जो महान कार्य हमारे लिये किये हैं, जब हम उन बातों पर अपना ध्यान लगाए रखेंगे तब ही हमारे मसीही जीवन में परमेश्वर के प्रति हम ऐसा दृष्टिकोण(सोच) रख पाएँगे। यदि परमेश्वर के प्रति हम ऐसा दृष्टिकोण (सोच) न रखें तो सबकुछ बिगड़ जाता है। बहुत से लोग अपनी समस्या को बहुत बड़ा बना देते हैं और परमेश्वर ने जो महान कार्य हमारे लिये किये हैं उसे देख नहीं पाते हैं।

उपयोग:
तुम्हारे लिये परमेश्वर ने बहुत से महान कार्य किये हैं। उनमें से कुछ कार्यों की सूचि बनाकर परमेश्वर की महिमा करो और पूरे विश्वास के साथ उसकी सेवा करने का निर्णय करो।

प्रभु ने अपने विश्वासी सेवक को अपने लिये चुनकर अलग रखा है — दिन 20

भजन संहिता 4:2-3

2 हे मनुष्यों के पुत्रों, कब तक मेरी महिमा के बदले अनादर होता रहेगा? तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे?
3 यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है; जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तब वह सुन लेगा।

दाऊद ने एक सही प्रश्न पूछा। अधर्मी कब तक अपने अधर्म के मार्ग पर चलते रहेंगे? वे हमेशा के लिये इस मार्ग पर चल नहीं सकते, तो बेहतर है कि अभी इसे छोड़ दें और आशिष पाएँ।

दाऊद जानता था कि उसे तथा अन्य धर्मी लोगों को परमेश्वर के लिये चुनकर अलग रखा गया था। हमारे खुद के आनन्द, महान पवित्रता और विशेष सेवा के लिये परमेश्वर हमें अलग रखता है...परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनेंगे इस बात पर हमें पूरा आत्मविश्वास होना चाहिये। जब प्रार्थना अप्रभावी होने लगे, तो प्रार्थना का उत्तर न मिलने का क्या कारण हो सकता है इस बात का आत्मिक परिक्षण करना लाभदायक होगा।

उपयोग:
आपको कैसे महसूस होता है कि परमेश्वर ने आपको अपने लिये चुनकर अलग रखा है? हाल ही में आपकी किन प्रार्थनाओं का उत्तर आपको मिला है? उनके लिये परमेश्वर की महिमा करो।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी दिन 21

भजन संहिता 91:3-4

3 वह तो तुझे बहलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा;
4 वह तुझे अपने पंखों की आड़ में रले लेगा, और तू उसके पंखों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।

परमेश्वर को एक पक्षी के रूप में दर्शाया गया है, जो अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे शरण देता है। विश्वास ही है जो हमें मुर्गी के बच्चे और परमेश्वर को मुर्गी बनाता है, ताकि हम उसके पंखों के नीचे छिप सकें, आशा पाएँ, मण्डराएँ और शरण लें, क्योंकि उसके पंखों के नीचे हम सुरक्षित हैं।

आराधना और संगति के इस छिपे हुए जीवन से ही आज्ञाकारिता और सेवा का सार्वजनिक जीवन सम्भव होता है। करने योग्य बनाता है। यह परमेश्वर हमें करूब के पंखों के नीचे शरण तो देता है, पर साथ ही जिस आत्मिक हथियार की हमें आवश्यक्ता है वह हमें वो भी देता है (इफिसियों 6:10-18)। जब हम उसके प्रतिज्ञाओं की माँग करते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तब उसकी सच्चाई और विश्वासयोग्यता हमारी रक्षा करते हैं।

उपयोग:
इफिसियों 6:10-18 पढ़ो और उस पर मनन करो।

एक सच्चा व्यक्ति कौन पा सकता है दिन 22

नीतिवचन 20:6

बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा पुरूष कौन पा सकता है?

यह सच है कि, अपनी नज़रों में सभी अपने खुद के बारे में अच्छा ही महसूस करता है। बहुत से लोगों को अपनी अच्छाई की घोषणा करना अच्छा लगता है, वे चाहते हैं कि अन्य लोग उनकी कथित अच्छाईयों को जानें।

एक मनुष्य में सच्चा विशवास और एक व्यक्ति की स्वप्रचारित अच्छाई में बड़ा अन्तर है। एक सच्चा विश्वासी न तो अपने अच्छाईयों की घोषणा करता है और न ही करना चाहता है।

उपयोग:
खुद को परमेश्वर के वचन रूपी आईने में देखो। क्या आपके परिवार या आपके दोस्तों को लगता है कि.....आप एक विश्वासयोग्य दोस्त हैं? परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये जो ज़रूरी है वह करो।

विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी — दिन 23

लूका 12:42-44

42 प्रभु ने कहा, वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वमी उसे नौकर–चाकरों पर प्रबन्धक ठहराए कि वह उन्हें समय पर सीधा दे।
43 धन्य है वह सेवक, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
44 मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर प्रबन्धक ठहराएगा।

वे सभी जो यीशु के सेवक हैं उन्हें उसके वापस आने के लिये तैयार रहना चाहिये, परन्तु उसके सेवकों में से जो धर्मप्रचार का काम करते हैं उन्हें तो और भी अधिक तैयार रहना चाहिये।

वह जो धर्मप्रचार करता है, जो अपने स्वामी की इच्छा तो जानता है पर उसके अनुसार नहीं करता, दूसरों को तो सिखाता है पर खुद उसका अनुसरण नहीं करता...इसकी तुलना में एक पापी जो परमात्मा को अनदेखा करता है उसको पूरी तरह से क्षमा नहीं मिलेगी, उसको कोड़े मारे जाएँगे, पर कम कोड़े मारे जाएँगे, उस पर कम श्राप लगेगा....

दुष्ट, चरित्रहीन, निन्दनीय और अनुशासनहीन धर्मप्रारकों को परमेश्वर सबसे बड़े अपराधी के रूप में देखता है, और उनके साथ उसका व्यवहार भी वैसा ही होगा।

उपयोग:
आपको जो भी ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गईं हैं उनके अनुसार अपने हृदय का परिक्षण करो। परमेश्वर आपके बारे में कैसा महसूस करेंगे? क्या परमेश्वर हमें अधिक बातों का प्रबन्धक बनाएँगे?

एक विश्वासयोग्य परमेश्वर जो गलत नहीं करता — दिन 24

व्यवयवस्थाविवरण 32:4

वह चट्टान है, उसका काम खरा है; उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा परमेश्वर है, उस में कुटिलता नहीं। वह धर्मी और निष्कपटी है।

परमेश्वर स्थिर स्वभाव के हैं, उनकी शक्ति अजय है, वे अपने परामर्शों, प्रतिज्ञाओं और तरीकों में निश्चित और अपरिवर्तनीय हैं; तो यदि आपके कामों में कोई दु:खद बदलाव आता है तो यह आपकी ओर से और परमेश्वर के प्रति आपके तरीकों को बदलने के कारण होता है, परमेश्वर के कारण नहीं।

परमेश्वर का काम सिद्ध है। उनके सभी काम जैसे सृष्टि, प्रबन्ध, या अनुग्रह, उनके सभी कार्य दोषरहित, सिद्ध, बुद्धिपूर्ण और धार्मिक हैं। आप जो उसके लोग हैं उनके साथ परमेश्वर का व्यवहार, और सारी मानवजाति के लिये संसार में उनका प्रशासन, अति उच्चतम् रूप में न्यायसंगत और पवित्र हैं।

उपयोग:
क्या आपको सन्देह है कि आपके जीवन में परमेश्वर ने कुछ गलत किया है? परमेश्वर की योजनाओं को समझने के लिये बुद्धि की माँग करो।

एक विश्वासी याजक — दिन 25

1 शमूएल 2:35

मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊँगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार सेवा किया करेगा। मैं उसका घर बसाऊँगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे–आगे सब दिन चला–फिरा करेगा।

- यह प्रतिज्ञा आंशिक रूप से शमूएल के द्वारा पूरा किया गया था, क्योंकि उसने एली के अधर्मी बेटों को हटाकर उनकी जगह एक धार्मिक याजक के रूप में कार्य किया था।
- यह प्रतिज्ञा आंशिक रूप से सुलैमान के समय में सादोक के द्वारा पूरा किया गया, क्योंकि उसने एली के वंश की याजकपद की जगह ले ली।
- यह प्रतिज्ञा अन्ततः यीशु मसीह में पूरा किया गया, क्योंकि मलिकिसिदक की रीति के अनुसार वह युगानयुग का याजक है(इब्रानियों 7:12-17)।

1पतरस 2:4-5 4उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवित पत्थर है 5तुम भी स्वयं जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसी आत्मिक बलि चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के ग्रहण योग्य हो।

हमें भी एक आत्मिक घर के रूप में बनाया जा रहा है, ताकि एक पवित्र याजक समाज बने।

उपयोग:

ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाना जो परमेश्वर को ग्राह्य हो – इस बात पर मनन करो।

एक विश्वासयोग्य परमेश्वर जो गलत नहीं करता — दिन 26

2 शमूएल 22:26-27

26 दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता। खरे पुरूष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है।
27 शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता। और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है।

एक व्यक्ति दूसरे लोगों के साथ जैसा व्यवहार करता है, परमेश्वर भी उसके साथ अक्सर वैसा ही व्यवहार करते हैं। पहाड़ पर किये अपने प्रचार में यीशु ने इस बात का वर्णन किया: क्योंकि जिस प्रकार से तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा। जिस नाप से तुम नापते हो उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा (मत्ती 7:2)।

स्वाभाविक रूप से मनुष्य दूसरों पर कम दया दिखाना चाहता है, परन्तु खुद पर परमेश्वर से अधिक दया की चाह रखता है। यीशु ने हमसे कहा जिस नाप से हम मनुष्यों को देते हैं परमेश्वर से भी उसी नाप से पाने की अपेक्षा करो।

उपयोग:

भजन संहिता 18 पढ़ो और उसके द्वारा प्रार्थना करो।

एक विश्वासी याजक — दिन 27

भजन संहिता 31:23-24

23 हे यहोवा के सब भक्तों उससे प्रेम रखो! यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता है, परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भान्ति बदला देता है।
24 हे यहोवा पर आशा रखनेवालों हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें।

एक आत्मा जो परमेश्वर से सच्चा प्रेम करता है उसके पास परमेश्वर से प्रेम न करने के कोई कारण नहीं होते। परमेश्वर से प्रेम करने के अनेक कारण परमेश्वर हमें देते हैं। वे जिनके मन परमेश्वर के प्रेम से भरे होते हैं, उनकी यही इच्छा होती है कि अन्य लोग भी परमेश्वर से प्रेम करें: क्योंकि उसके प्रेम में किसी विरोधी से डरने की आवश्यक्ता नहीं।

परमेश्वर घमण्डी का विरोध करता है, पर दीन पर अनुग्रह करता है। परमेश्वर की प्रशंसा करने के इस प्रोत्साहन में उन लोगों के लिये एक चेतावनी है जो ऐसा करने से इनकार करते हैं। परमेश्वर के लोगों के पास बड़े साहस के अनेक कारण हैं, क्योंकि एक भरोसा करनेवाले और आशावादी हृदय को परमेश्वर मजबूत बनाते हैं।

उपयोग:
आप कैसे जाने जाते हैं – विश्वासी या घमण्डी? क्यों? अपनी इस परिस्थिती के लिये विशेष प्रार्थना करो।

जिन्हें ज़िम्मेदारी दी गई है वे विश्वासयोग्य निकलें — दिन 28

1 कुरिन्थियों 4:1-2

1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें।
2 फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वासयोग्य निकलें।

पौलुस और दूसरे प्रेरितों ने परमेश्वर के घर–परिवार में किस बात की ज़िम्मेदारी "सम्भाली"? दूसरी बातों के साथ–साथ वे परमेश्वर के भेदों के भण्डारी भी थे। उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को (उसका संरक्षण और सुरक्षा करके) "सम्भाला" और (उसका वितरण करके) उसे "बांटा"।

भण्डारियों के लिये विश्वासयोग्य होना एक महत्वपूर्ण बात थी। उन्हें स्वामी के संसाधनों का कुशल प्रबन्धक बनना था। एक भण्डारी जिस सम्पत्ति या संसाधनों को सम्भाल रहा था उन पर उसका कभी कोई अधिकार नहीं होता था; वह केवल अपने स्वामी के लिये उनकी देखभाल करता था और वो भी पूरे विश्वास के साथ।

उपयोग:
अपने कुछ पसन्दीदा वचनों को लिखकर कुछ लोगों के साथ बाँटो, कि क्यों यह वचन आपको इतने पसन्द हैं।

एक विश्वासी याजक — दिन 29

गलातियों 5:22-23

22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
24 और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

जिन गुणों को परमेश्वर हमारे जीवन में देखना चाहते हैं वे आत्मा का नौ गुना फल में है। परमेश्वर का आत्मा हम में परमेश्वर और मनुष्य दोनों के प्रति विश्वासीपन उत्पन्न करता है। यह एक ऐसे व्यक्ती का गुण है जो भरोसेमन्द है।

अनेक वर्षों तक और जीवन के प्रलोभनों के बीच विश्वास के साथ परमेश्वर की सेवा करने की योग्यता हम हमारे वीरतापूर्ण गुणों के बल पर नहीं पा सकते। यह आत्मा के द्वारा होता है।

उपयोग:
आत्मा के अनुसार जीवन बिताने के लिये हमें और क्या करना होगा (गलातियों 5:25-26 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें)।

वह अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है — दिन 30

नीतिवचन 2:7-9

7 वह सीधे लोगों के लिये करी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है।
8 वह न्याय के पथों की देखभला करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।
9 तब तू धर्म और न्याय, और सिधाई को, अर्थात् सब भली–भली चाल को समझ सकेगा।

परमेश्वर अपने वचनों से केवल बुद्धिमत्ता ही नहीं देता; पर जो उसके मार्ग पर चलते हैं उन्हें बचाने, उनकी रखवाली करने और उनकी रक्षा करने के लिये सक्रीयता से कार्य भी करता है। वह न्याय के पथों की देखभाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।

जिसे परमेश्वर के बारे में सिखाया गया है वह, न्याय, दया, धार्मिकता और सच्चाई के सम्पूर्ण व्यवस्था को समझता है; इसे परमेश्वर ने उसके मन पर लिखा है। वह जो इन बातों को केवल किताबी ज्ञान के रूप में समझता है, वह न तो कभी इन बातों का अनुसरण करेगा ओर न ही कभी इन बातों का लाभ उठा पाएगा।

उपयोग:
क्या आप सुरक्षित महसूस करते हैं? आप कैसा और क्यों महसूस करते हैं, विशेष रूप से इस बात के लिये प्रार्थना करो।

भजन संहिता 145:17-18

17 प्रभु अपने सब गति में धर्मी और अपने सब कामों में करूणामय है।
18 जितने प्रभु को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभों के वह निकट रहता है।

प्रभु अपने सब गति में धर्मी और अपने सब कामों में पवित्र है। उसके तरीके और उसके काम दोनों ही प्रशंसा के योग्य हैं। यहोवा अन्यायी और अपवित्र नहीं हो सकता। उसके काम जैसे भी हैं वैसे होने दें, वो हर हाल में उसके काम धर्मी और पवित्र हैं। धर्मी जो उसके मार्गों पर चलते और अनुग्रही जो उसके कामों को जानते हैं; उनकी यही गवाही है।

परमेश्वर चाहे जैसे भी हैं या जो भी करते हैं वो सब सही ही होते हैं। वह अपने अन्य तरीकों और कामों में जितना धर्मी और पवित्र है, अपने लोगों के उद्धार में भी वह उतना ही धर्मी और पवित्र है: उसने न्याय को दाँव पर रखकर दया नहीं दिखाया, पर उसने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा अपनी धार्मिकता की बढ़ाई की।

उपयोग:
भजन संहिता 145 के द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा करो।